ओ३म्

विवेक = सत्यज्ञान = यथार्थज्ञान = तत्वज्ञान एक ऐसी चीज है, जो वैराग्य को उत्पन्न करती है। वैराग्य एक ऐसी चीज है, जो समाधि को उत्पन्न करती है। समाधि एक ऐसी चीज है, जो ईश्वर की अनुभूति कराती है, ईश्वर की प्राप्ति कराती है। ईश्वर की प्राप्ति एक ऐसी चीज है, जो हमारे जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कारों को नष्ट करती है। जब हमारे कुसंस्कार नष्ट हो जाते हैं, दग्धबीज हो जाते हैं, तब हमें जो चाहिए, उसकी प्राप्ति होती है। अर्थात् हम उस अवस्था को प्राप्त होते हैं, जहां कोई क्लेश नहीं होता है, कोई दुःख नहीं होता है। कैवल्य पद को, मोक्ष पद को, परम पद को प्राप्त कर लेते हैं।

# JANUARY 2026

# जनवरी- २०२६

**December 2025**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

**February 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | |

पौष - माघ

विक्रम संवत्- २०८२ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२६

उत्तरायण शिशिर ऋतु दयानन्दाब्द-२०१

गुरुकुल हरिपुर का "षोडश चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव" तथा ओड़िशा राज्य वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा 24, 25, 26

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | रोहिणी 1 पौष शु.१३ | मृगशिरा 2 पौष शु.१४ | आर्द्रा 3 पौष शु. पूर्णिमा | पुनर्वसु 4 माघ कृ. १ |
| पुष्य 5 माघ कृ. २ | आश्लेषा 6 माघ कृ.३ | मघा 7 माघ कृ.४ | पूर्वाफाल्गुनी 8 माघ कृ. ५ | उत्तराफाल्गुनी 9 माघ कृ.६ | हस्त 10 माघ कृ.७ | चित्रा 11 माघ कृ.८ |
| स्वाती 12 माघ कृ.९ राष्ट्रीय युवा दिवस | विशाखा 13 माघ कृ.१० | अनुराधा 14 माघ कृ.११ मकर संक्रान्ति | ज्येष्ठा 15 माघ कृ. १२ थल सेना दिवस | मूल 16 माघ कृ. १३ | मूल 17 माघ कृ.१४ | पूर्वाषाढा 18 माघ कृ. अमावास्या |
| उत्तराषाढा 19 माघ शु. १ | श्रवण 20 माघ शु.२ कुम्भ संक्रान्ति | धनिष्ठा 21 माघ शु. ३ | शतभिषा 22 माघ शु. ४ रोशन सिंह जन्म दिवस श्रीराम मन्दिर प्रतिष्ठा दिवस | पूर्वाभाद्रपदा 23 माघ शु. ५ बसन्त पंचमी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती | उत्तरभाद्रपदा 24 माघ शु. ६ | रेवती 25 माघ शु. ७ |
| अश्विनी 26 माघ शु. ८ भारतीय गणतन्त्र दिवस | भरणी 27 माघ शु.९ | कृत्तिका 28 माघ शु.१० लाला लाजपतराय जयन्ती | मृगशिरा 29 माघ शु.११ | आर्द्रा 30 माघ शु.१२ मौन दिवस | पुनर्वसु 31 माघ शु.१३/१४ | |

जायन्ते विविधा रोगाः प्रायशो मलसञ्चयात्।
सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिताः मलाः।।

जितने भी रोग हैं, उन सबकी उत्पत्ति मल के कुपित होने से होती है। जिस मल के बाहर निकालने से ऐसी भयंकर दुर्गन्ध आती है कि सब कोई उससे दूर भागते हैं, फिर वह शरीर के अन्दर पड़ा हुआ रहेगा तो सुगन्ध देगा? मल, मूत्र, अपान वायु आदि वेगों को किसी भी अवस्था में मनुष्य को नहीं रोकना चाहिए ।

रोकने के लिए तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक, भय, चिन्ता, अहंकार आदि मल के वेग ही बहुत हैं।

गुरुकुल प्रवेश द्वार


/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

गुरुकुल चलो.......... जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105 हरिपुर चलो.....

षोडश वार्षिक महोत्सव 24.25.26 जनवरी को आयोजित है, आप सपरिवार अवश्य पधारें ।

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

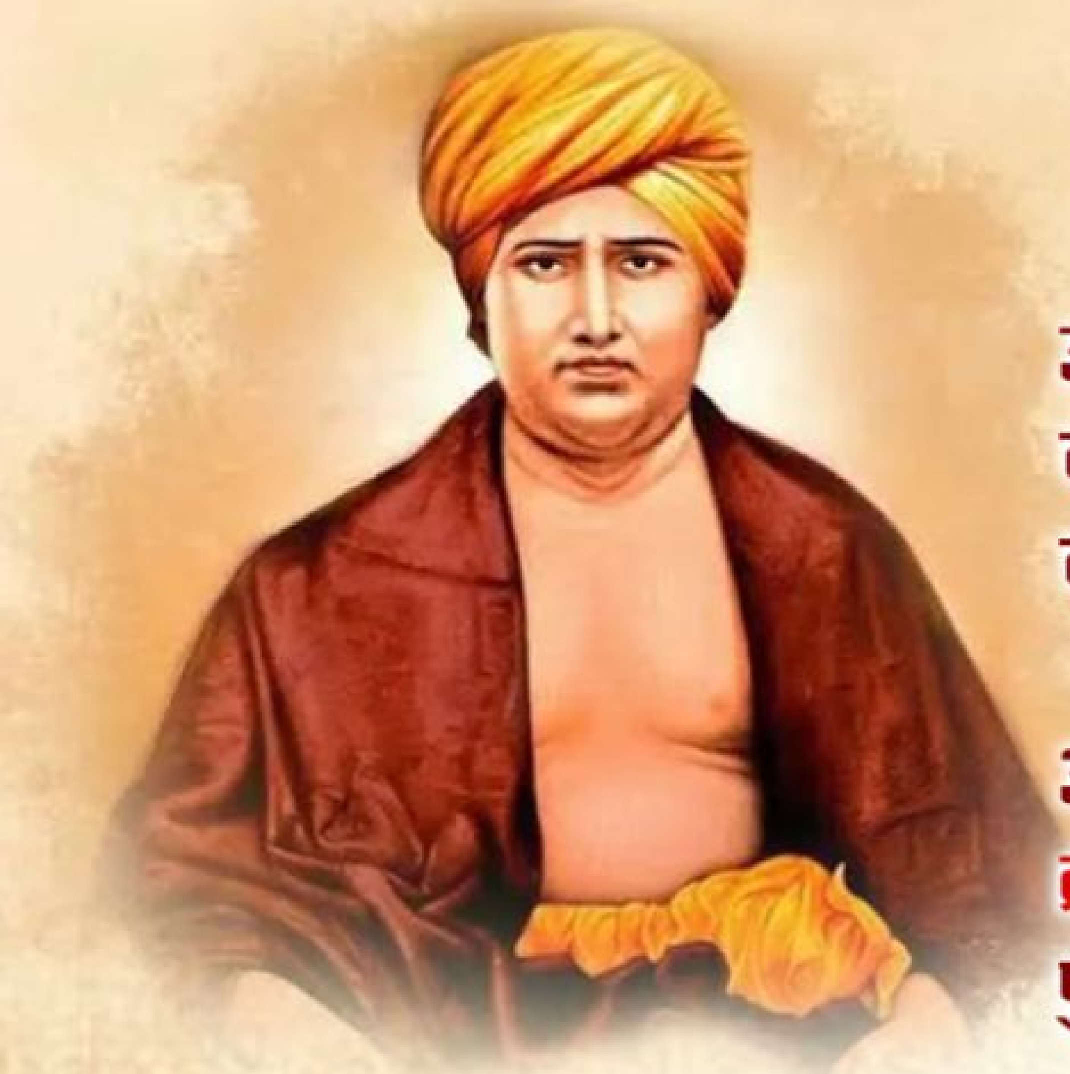

ओ३म्

मनुष्य जीवन की सफलता के लिए ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। ईश्वर की उपासना करने के लिए ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जानना चाहिए। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावों को जानने के लिए ईश्वर के नामों को जानना चाहिए। ईश्वर के नामों को जानने के लिए वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए ।

ईश्वर का अपना कोई लिंग नहीं है, किन्तु तीनों लिंगों में ईश्वर के नाम हैं। अर्थात् पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में ईश्वर के नाम हैं। जैसे ईश्वर, लक्ष्मी, ब्रह्म आदि। ये नामों के ही लिंग हैं। किन्तु ईश्वर का कोई लिंग नहीं होता है। ईश्वर स्त्री, पुरुष, नपुंसक नहीं है।

**January 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

# FEBRUARY 2026

## फरवरी- २०२६

माघ-फाल्गुन

**March 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | 31 | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 28 | 26 | 27 | 28 | 29 |

विक्रम संवत्- २०८२ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२६

उत्तरायण वसन्त ऋतु दयानन्दाब्द-२०१-२०२

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती
जन्म दिवसः माघ कृ. १०-२०८२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | पुष्य<br>1<br>माघ शु. पूर्णिमा<br>रविदास जयन्ती |
| आश्लेषा<br>2<br>फाल्गुन कृ. १ | मघा<br>3<br>फाल्गुन कृ.२ | पूर्वाफाल्गुनी<br>4<br>फाल्गुन कृ.३<br>विश्व कैंसर दिवस | उत्तराफाल्गुनी<br>5<br>फाल्गुन कृ.४ | हस्त<br>6<br>फाल्गुन कृ.५ | चित्रा<br>7<br>फाल्गुन कृ.६ | स्वाती<br>8<br>फाल्गुन कृ.७ |
| विशाखा<br>9<br>फाल्गुन कृ.८ | विशाखा<br>10<br>फाल्गुन कृ.८ | अनुराधा<br>11<br>फाल्गुन कृ.९ | ज्येष्ठा<br>12<br>फाल्गुन कृ.१०<br>महर्षि दयानन्द जयन्ती | मूल<br>13<br>फाल्गुन कृ.११ | पूर्वाषाढा<br>14<br>फाल्गुन कृ.१२ | उत्तराषाढा<br>15<br>फाल्गुन कृ.१३<br>महाशिवरात्रि<br>दयानन्द बोधरात्रि |
| श्रवण<br>16<br>फाल्गुन कृ.१४<br>तात्या टोपे जन्म दिवस | धनिष्ठा<br>17<br>फाल्गुन कृ. अमावास्या<br>रमजान-रोजे | शतभिषा<br>18<br>फाल्गुन शु. १<br>मीन संक्रान्ति<br>वसन्त ऋतु प्रारम्भ | पूर्वाभाद्रपदा<br>19<br>फाल्गुन शु.२<br>छ. शिवाजी जयन्ती | उत्तराभाद्रपदा<br>20<br>फाल्गुन शु.३ | रेवती<br>21<br>फाल्गुन शु.४ | अश्विनी<br>22<br>फाल्गुन शु. ५<br>स्वा. श्रद्धानन्द जयन्ती |
| भरणी<br>23<br>फाल्गुन शु. ६ | कृत्तिका<br>24<br>फाल्गुन शु. ७/८ | रोहिणी<br>25<br>फाल्गुन शु. ९ | मृगशिरा<br>26<br>फाल्गुन शु. १० | आर्द्रा<br>27<br>फाल्गुन शु. ११<br>चन्द्रशेखर आजाद बलिदान दिवस | पुनर्वसु<br>28<br>फाल्गुन शु. १२<br>राष्ट्रिय विज्ञान दिवस | |

**समदोष : समाग्निश्च समधातुमलक्रिय : ।**
**प्रसन्नात्मेन्द्रियमन : स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।**

जिसके तीनों दोष वात, पित्त एवं कफ सम हों, जठराग्नि न तीक्ष्ण, न मन्द और न विषम हो बल्कि सम हो, शरीर को धारण करने वाली सप्त धातुएं = रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र उचित अनुपात में हों, मल, मूत्र की प्रक्रिया सम्यक् प्रकार से होती हों, आत्मा, इन्द्रियाँ व मन प्रसन्न अवस्था में हों, उसी व्यक्ति को स्वस्थ कहा जा सकता है।

रोगस्तु दोष वैषम्यम् - वात, पित्त, कफ को ही त्रिदोष कहा जाता है। शरीर में जब वात, पित्त, कफ तीनों समान और शान्त अवस्था में रहते हैं, तब शरीर को धारण करने वाले होने से ये धातु कहे जाते हैं। जब ये विषम और कुपित अवस्था में होते हैं, तब दोष कहे जाते हैं और रोग पैदा करते हैं।

यज्ञशाला

/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

gurukulharipur2019@gmail.com www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य ये बुद्धि के चार रूप होते हैं, ये बुद्धि के श्रेष्ठ रूप हैं। अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य ये बुद्धि के चार निकृष्ट रूप हैं। बुद्धि ही धर्म रूप होती है और बुद्धि ही अधर्म रूप होती है। बुद्धि ज्ञान रूप होती है और बुद्धि ही अज्ञान रूप होती है। बुद्धि ही वैराग्य रूप धारण कर लेती है और बुद्धि में ही राग आता है। बुद्धि में ही ऐश्वर्य होता है। ऐश्वर्य का अर्थ दृढ इच्छाशक्ति और बुद्धि में ही मन्द इच्छा होती है।

इसी तरह बुद्धि की शान्त, क्रूर और मूढ़ ये तीन वृत्तियां होती हैं। बुद्धि के इन रूपों को समझकर हमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य व ऐश्वर्य में रहना है और बुद्धि की जो शान्त वृत्ति है, उसमें रहना है। यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारा जीवन उन्नति की ओर आगे बढ़ता जायेगा और यदि बुद्धि के निकृष्ट और क्रूर और मूढ़ रूप में रहेंगे, तो हमारा पतन सुनिश्चित है, यह जानना चाहिए ।

**February 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | |

# MARCH 2026

## मार्च- २०२६

फाल्गुन-चैत्र

**April 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

विक्रम संवत्- २०८२-८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२६ - २७

उत्तरायण वसन्त ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

**15** – से कनिष्ठ ब्रह्मचारियों की वार्षिक परीक्षा

**19** – नूतन वर्ष पालन महोत्सव

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मघा 30 चैत्र शु. १२ | पूर्वाफाल्गुनी 31 चैत्र शु. १३ महावीर जयन्ती | | | | | पुष्य 1 फाल्गुन शु. १३ |
| आश्लेषा 2 फाल्गुन शु. १४ | मघा 3 फाल्गुन शु. पूर्णिमा होली वासन्तीय नवसस्येष्टि | पूर्वाफाल्गुनी 4 चैत्र कृ. १ | उत्तराफाल्गुनी 5 चैत्र कृ. २ भातृ द्वितीया | हस्त 6 चैत्र कृ.३ | चित्रा 7 चैत्र कृ.४ | स्वाती 8 चैत्र कृ.५ विश्व महिला दिवस |
| विशाखा 9 चैत्र कृ.६ | अनुराधा 10 चैत्र कृ.७ | ज्येष्ठा 11 चैत्र कृ.८ | मूल 12 चैत्र कृ.९ | पूर्वाषाढा 13 चैत्र कृ.१० | उत्तराषाढा 14 चैत्र कृ.११ | श्रवण 15 चैत्र कृ.११ |
| धनिष्ठा 16 चैत्र कृ.१२ | शतभिषा 17 चैत्र कृ.१३ | पूर्वाभाद्रपदा 18 चैत्र कृ. १४ | उत्तराभाद्रपदा 19 चैत्र कृ. अमावस्या/१ आर्यसमाज स्थापना दिवस नवरात्र नव संवत्सर प्रारम्भ | रेवती 20 चैत्र शु. २ ईद-उल-फितर मेष संक्रान्ति | अश्विनी 21 चैत्र शु.३ | भरणी 22 चैत्र शु. ४ |
| कृत्तिका 23 चैत्र शु. ५ बलिदान दिवस | रोहिणी 24 चैत्र शु. ६ | मृगशिरा 25 चैत्र शु. ७ | आर्द्रा 26 चैत्र शु. ८ | पुनर्वसु 27 चैत्र शु. ९ श्रीराम नवमी | पुष्य 28 चैत्र शु. १० | आश्लेषा 29 चैत्र शु. ११ |

**एकभुक्तं सदारोग्यं द्विभुक्तं बलवर्धनम् ।**
**त्रिभुक्तं च सदारोगं चतुर्भुक्तं तु मारकम् ।।**

जो व्यक्ति दिन में एक बार भोजन करता है, वह हमेशा स्वस्थ रहता है। जो दिन में दो बार भोजन करता है, वह सुखी और तन्दुरुस्त रहता है। जो तीन बार भोजन करता है, वह रोगी हो जाता है। और जो चार बार भोजन करता है, उसकी मृत्यु तक हो सकती है।

बार-बार भोजन करना स्वास्थ्य घातक है। मनुष्य के सिवाय सभी जानवर पेट भर जाने के बाद भोजन की ओर देखते भी नहीं हैं।

सच्ची भूख में रूखी रोटी, सूखी सब्जी भी अमृतमय लगती है। उबली सब्जी, ताजे फल, सलाद तथा अंकुरित अन्न प्राण से भी प्यारे लगते हैं। यदि आपको स्वादिष्ट भोजन व मिठाईयाँ खाने की इच्छा हो तो समझना कि झूठी भूख है। हितोशी स्यात् मिताशी स्यात् कालभोजी जितेन्द्रियः ।।

# गुरुकुल हरिपुर

/@GurukulHaripur

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

जीवन की सफलता इसी बात में है- जो अपने पास है, वह दूसरों के लिए लगाते रहें। अपने जीवन में कोई दोष आने ही न दें। अपने पास यदि कोई गुण हो तो उसका कभी अभिमान न करे। भगवान् के प्रति हमारा जो प्रेम है, वह सच्चा प्रेम में उमड़ता रहे । इसी प्रकार भगवान् के प्रति, अपने प्रति और दूसरों के प्रति जो दायित्व है, उसको भी पूरा करे। दूसरों के प्रति दायित्व कर्म से पूरे होंगे। अपने प्रति दायित्व ज्ञान से पूरे होंगे और भगवान् के प्रति दायित्व प्रेम से पूरे होंगे।

**March 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | 31 | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

# April 2026
# अप्रैल २०२६

चैत्र-वैशाख

**May 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण वसन्त - ग्रीष्म ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | उत्तराफाल्गुनी<br>1<br>चैत्र शु. १४<br>बैंक अवकाश | हस्त<br>2<br>चैत्र शु. पूर्णिमा<br>हनुमान जयन्ती | चित्रा<br>3<br>वैशाखा कृ.१<br>गुड फ्राईडे | स्वाती<br>4<br>वैशाख कृ.२ | विशाखा<br>5<br>वैशाख कृ.३ |
| अनुराधा<br>6<br>वैशाख कृ.४<br>महाशय राजपाल बलिदान दिवस | ज्येष्ठा<br>7<br>वैशाख कृ.५ | मूल<br>8<br>वैशाख कृ.६ | मूल<br>9<br>वैशाख कृ.७ | पूर्वाषाढा<br>10<br>वैशाख कृ.८ | उत्तराषाढा<br>11<br>वैशाख कृ.९ | श्रवण<br>12<br>वैशाख कृ.१० |
| धनिष्ठा<br>13<br>वैशाख कृ.११ | शतभिषा<br>14<br>वैशाख कृ.१२<br>डॉ. अम्बेडकर जयन्ती | पूर्वाभाद्रपदा<br>15<br>वैशाख कृ.१३ | उत्तराभाद्रपदा<br>16<br>वैशाख कृ.१४ | रेवती<br>17<br>वैशाख कृ. अमावस्या | अश्विनी<br>18<br>वैशाख शु. १ | भरणी<br>19<br>वैशाख शु. २<br>अक्षय तृतीया<br>परशुराम जयन्ती<br>लाला हंसराज जन्म दिवस |
| कृत्तिका<br>20<br>वैशाख शु. ३<br>वृषभ संक्रान्ति<br>ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ | रोहिणी/मृगशिरा<br>21<br>वैशाख शु.४ | आर्द्रा<br>22<br>वैशाख शु.५/६<br>पृथ्वी दिवस | पुनर्वसु<br>23<br>वैशाख शु.७ | पुष्य<br>24<br>वैशाख शु.८ | आश्लेषा<br>25<br>वैशाख शु.९ | मघा<br>26<br>वैशाख शु.१०<br>गुरुदत्त विद्यार्थी जन्म दिवस |
| पूर्वाफाल्गुनी<br>27<br>वैशाख शु.११ | उत्तराफाल्गुनी<br>28<br>वैशाख शु.१२ | हस्त<br>29<br>वैशाख शु.१३ | चित्रा<br>30<br>वैशाख शु. १४ | | | |

**1** - नूतन शिक्षा वर्ष आरम्भ
**5,26** - गुरुकुल प्रवेश परीक्षा
**12 से 19** - आंग्लभाषा सम्भाषण शिविर

दिनान्ते च पिबेद् दुग्धं निशान्ते च जलं पिबेत् ।
भोजनान्ते पिबेत् तक्रं वैद्यस्य किं प्रयोजनम् ।।

जो मनुष्य प्रातः जल का, दिन में भोजन के बाद तक्र (लस्सी) का और रात को सोने से पहले दूध का सेवन करता है, वह नीरोग रहता है।

देशी गाय का दूध को अमृत माना गया है। दूध बुद्धि बढ़ाने वाला, बलदायक, पुष्टि देने वाला, धातुओं को बढ़ाने वाला रसायन होता है। शुद्ध जल अमृत के समान है। जल ही जीवन है। अजीर्ण में जल औषधि का काम करता है और भोजन पच जाने पर जल बलदायक होता है। किन्तु भोजन के अन्त में जल एकदम पी लेने से वह विष की तरह हानिकारक होता है। खाने के 40 मिनट पहले और 60 से 90 मिनट के बाद पानी पीयें। तक्र (लस्सी = छाछ) को मनुष्यों का अमृत कहा जाता है। अतः भोजन के अनन्तर छाछ जरुर पीयें।

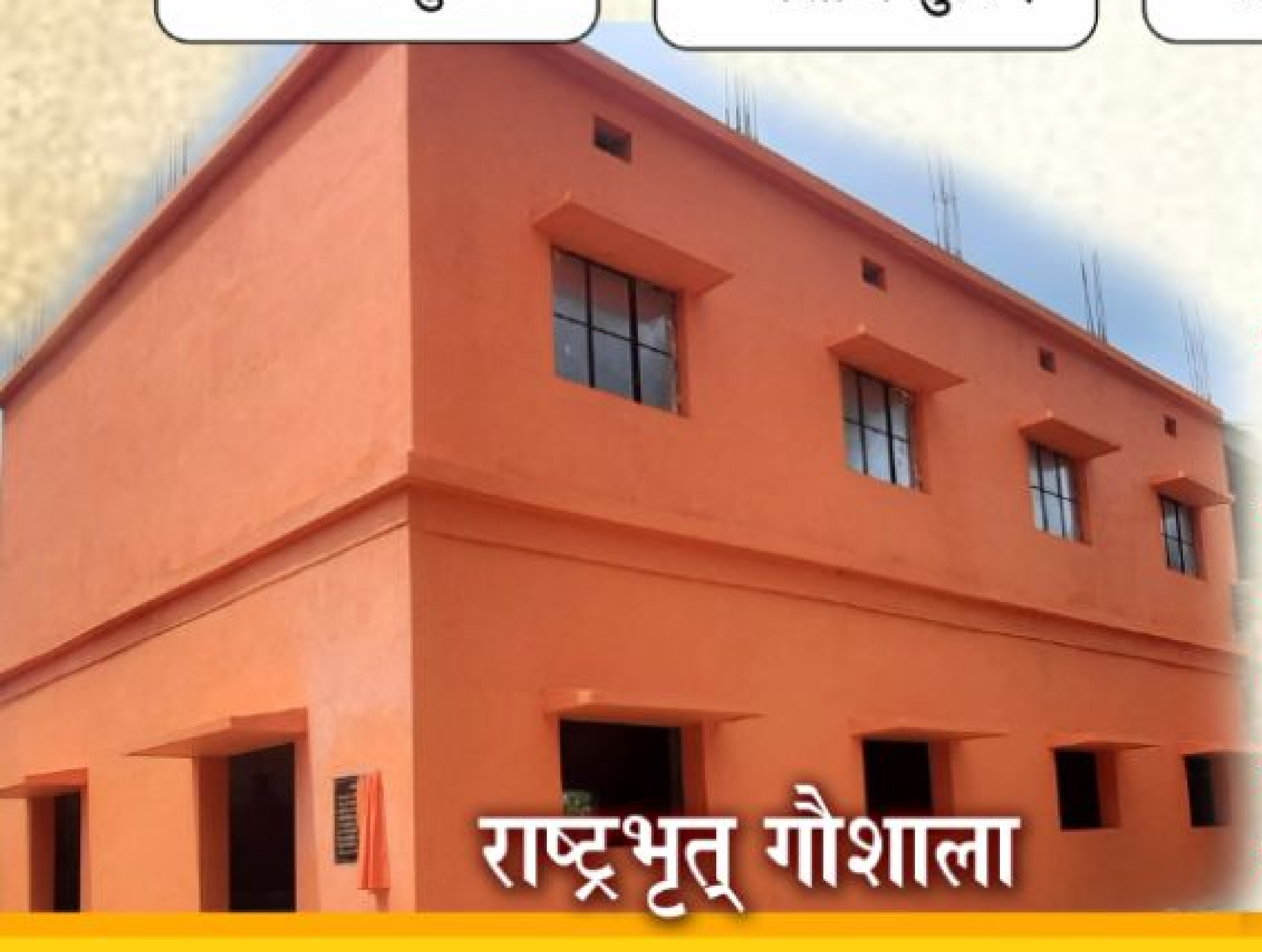



/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

यह जो मन बना हुआ है, यही सृष्टि के आरम्भ से लेकर प्रलय तक हमारे शरीर में बना रहता है। हम एक जन्म से दूसरे जन्म में जाते हैं, लेकिन मन वही का वही दूसरे शरीर में जाता है। शरीर नष्ट हो जाता है, परन्तु मन नष्ट नहीं होता। मन केवल दो स्थितियों में नष्ट होता है- एक तो प्रलय अवस्था आ जाने पर अथवा जीवात्मा के मुक्ति में चले जाने पर।

मन एक द्रव्य है, पदार्थ है, सश्चिका (कॉपी) के समान है, जैसे सश्चिका में हम जो सुनते हैं या जानते हैं, उनको सश्चय करते हैं, वैसे ही लेखनी से लिखते हैं। मन रूपी सश्चिका में हम दैनिक जीवन में जिन कर्मों को करते हैं, चाहे वो पुण्य हों, चाहे वो पाप हों, उन सबकी छाप विचारों के द्वारा पड़ता है, संस्कारों के रूप में पड़ता है, अत: अच्छे विचार लायें और अच्छी छाप मन में डालें।

**April 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

# MAY 2026

# मई २०२६

वैशाख-अधिक ज्येष्ठ

**June 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण ग्रीष्म ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

1- गुरुकुल हरिपुर स्थापना दिवस

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | स्वाती<br>**1**<br>वैशाख शु. पूर्णिमा<br>विश्व श्रमिक दिवस | विशाखा<br>**2**<br>ज्येष्ठ कृ. १<br>नारद जयन्ती | विशाखा<br>**3**<br>ज्येष्ठ कृ. २<br>विश्व हास्य दिवस<br>प्रेस स्वतन्त्रता दिवस |
| अनुराधा<br>**4**<br>ज्येष्ठ कृ.३ | ज्येष्ठा<br>**5**<br>ज्येष्ठ कृ.४ | मूल<br>**6**<br>ज्येष्ठ कृ.५ | पूर्वाषाढा<br>**7**<br>ज्येष्ठ कृ.५ | उत्तराषाढा<br>**8**<br>ज्येष्ठ कृ.६<br>विश्व रेडक्रॉस दिवस | श्रवण<br>**9**<br>ज्येष्ठ कृ.७<br>रविन्दर नाथ टैगोर जयन्ती | धनिष्ठा<br>**10**<br>ज्येष्ठ कृ.८<br>मातृ दिवस<br>शीतलाष्टमी व्रत |
| शतभिषा<br>**11**<br>ज्येष्ठ कृ.९ | पूर्वाभाद्रपदा<br>**12**<br>ज्येष्ठ कृ.१० | उत्तराभाद्रपदा<br>**13**<br>ज्येष्ठ कृ.११ | रेवती<br>**14**<br>ज्येष्ठ कृ.१२<br>वट सावित्री व्रतारम्भ | अश्विनी<br>**15**<br>ज्येष्ठ कृ.१३/१४<br>सुखदेव जन्मदिवस | भरणी<br>**16**<br>ज्येष्ठ कृ. अमावास्या<br>वट सावित्री व्रत | कृत्तिका<br>**17**<br>ज्येष्ठ शु. १ |
| रोहिणी<br>**18**<br>ज्येष्ठ शु.२ | मृगशीर्षा<br>**19**<br>ज्येष्ठ शु.३<br>नाना साहेब जन्म दिवस | आर्द्रा<br>**20**<br>ज्येष्ठ शु.४ | पुनर्वसु<br>**21**<br>ज्येष्ठ शु.५<br>मिथुन संक्रान्ति | पुष्य<br>**22**<br>ज्येष्ठ शु.६ | आश्लेषा<br>**23**<br>ज्येष्ठ शु.७ | मघा<br>**24**<br>ज्येष्ठ शु.८ |
| पूर्वाफाल्गुनी<br>**25**<br>ज्येष्ठ शु.९ | उत्तरफाल्गुनी<br>**26**<br>ज्येष्ठ शु.१० | हस्त<br>**27**<br>ज्येष्ठ शु.११<br>ईद-उल-अजहा | चित्रा<br>**28**<br>ज्येष्ठ शु.१२<br>वीर सावरकर जन्म दविस | स्वाती<br>**29**<br>ज्येष्ठ शु.१३ | विशाखा<br>**30**<br>ज्येष्ठ शु.१४ | अनुराधा<br>**31**<br>ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा<br>विश्व तम्बाकू निषेध दिवस |


।। ओ३म् ।।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ସଂସ୍କୃତ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ନୂଆ ଦିଲ୍ଲୀ)

संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित (शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)

ସଂସଦର ଅଧିନିୟମ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ (ଶିକ୍ଷା ମନ୍ତ୍ରାଳୟ, ଭାରତ ସରକାରଙ୍କ ଅଧୀନରେ)

द्वारा मान्यता प्राप्त

A++ NAAC

**महाविद्यालय गुरुकुल हरिपुर**

प्रथमा- छठवीं से आठवीं कक्षा के समकक्ष है तथा इसकी सम्बद्धता ओड़िशा सरकार के विद्यालय एवं गणशिक्षा विभाग से है।

पूर्वमध्यमा (मैट्रीक समकक्ष) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ओड़िशा आदि से मान्य (Equivalence),

प्राक् शास्त्री (+2 समकक्ष)

शास्त्री (B.A. समकक्ष) (व्याकरण, साहित्य, दर्शन और वेद कर्मकाण्ड-पौरोहित्यम्)

पीजी डिप्लोमा (PG Diploma)(योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आहार विज्ञान)

(Yoga Naturopathy and Dietetics)

योग प्रमाणपत्र (Certificate Yoga)

F.NO-16-1/CSU/Acd/GH/Aff.2024/781 * F.No.16-I/CSU/Acd/GH/Aff./2025/941

19.07.2024 सम्पर्क- 9437188321, 9438381611 13.08.2025


**वामशायी द्विभुञ्जानो षण्मूत्री द्विपुरुषकः।**
**स्वल्पमैथुनकारी च शतं वर्षाणि जीवति ।।**

बायीं करवट सोने वाला, दिन में दो बार भोजन करने वाला, कम से कम छः बार लघुशंका, दो बार शौच जाने वाला (गृहस्थ में आवश्यक होने पर) स्वल्प मैथुनकारी व्यक्ति सौ वर्ष तक जीवित रहता है।


/@GurukulHaripur

**गुरुकुल हरिपुर**

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

दो पदार्थ हैं, जिनमें सुख है। 1) ईश्वर में सुख है । 2) प्रकृति के सत्वगुण में सुख है। प्रकृति अर्थात् सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण। इन तीनों में से सत्वगुण में हीं सुख है। रजोगुण दुःख देता है और तमोगुण मूर्ख बनाता है। अविद्या उत्पन्न करता है। आलस्य, प्रमाद आदि पैदा करता है। जब भी आपको सुख मिलेगा, तब मन के सत्वगुण से मिलेगा या तो ईश्वर से मिलेगा। ईश्वर से जो सुख मिलता है, वह या तो असम्प्रज्ञान समाधि में मिलता है या मोक्ष में मिलता है। ईश्वर का सुख यहां संसार में या सांसारिक पदार्थों में नहीं मिलेगा। अन्य जितना भी सुख है, वह प्रकृति के सत्वगुण का सुख है। चाहे आपको वह सुख निद्रा में मिलता हो, चाहे स्वप्न में मिलता हो, चाहे वह खाने-पीने, घूमने, यज्ञ और ध्यानादि करने से क्यों न मिलता हो ।

**May 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

# JUNE 2026
# जून २०२६

अधिक ज्येष्ठ-ज्येष्ठ

**July 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण ग्रीष्म-वर्षा ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्येष्ठा<br>**1**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. १ | मूल<br>**2**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. २ | पूर्वाषाढा<br>**3**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ३ | उत्तराषाढा<br>**4**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ४ | श्रवण<br>**5**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ५<br>विश्व पर्यावरण दिवस | धनिष्ठा<br>**6**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ६ | शतभिषा<br>**7**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ७ |
| पूर्वाभाद्रपदा<br>**8**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ.८ | उत्तराभाद्रपदा<br>**9**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ.९ | रेवती<br>**10**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ.१० | अश्विनी<br>**11**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. ११<br>रामप्रसाद बिस्मिल जन्म दिवस | भरणी<br>**12**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. १२ | कृत्तिका<br>**13**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ.१३ | रोहिणी<br>**14**<br>अधिक ज्येष्ठ कृ. १४ |
| मृगशिरा<br>**15**<br>अ.ज्येष्ठ कृ. अमावस्या | आर्द्रा<br>**16**<br>अधिक ज्येष्ठ शु. १/२ | पुनर्वसु<br>**17**<br>अधिक ज्येष्ठ शु. ३<br>विश्व पर्यावरण दिवस | पुष्य<br>**18**<br>ज्येष्ठ शु.४ | आश्लेषा<br>**19**<br>ज्येष्ठ शु.५ | मघा<br>**20**<br>ज्येष्ठ शु.६ | पूर्वाफाल्गुनी<br>दक्षिणायन **21** वर्षा ऋतु प्रारम्भ<br>ज्येष्ठ शु.७<br>कर्क संक्रान्ति |
| उत्तराफाल्गुनी<br>**22**<br>ज्येष्ठ शु.८ | हस्त<br>**23**<br>ज्येष्ठ शु.९ | चित्रा<br>**24**<br>ज्येष्ठ शु. १० | स्वाती<br>**25**<br>ज्येष्ठ शु. ११ | विशाखा<br>**26** मोहर्रम<br>ज्येष्ठ शु. १२<br>नशा निरोध दिवस | अनुराधा<br>**27**<br>ज्येष्ठ शु. १३ | ज्येष्ठा<br>**28**<br>ज्येष्ठ शु. १४ |
| मूल<br>**29**<br>ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा | पूर्वाषाढा<br>**30**<br>आषढ़ कृ. १ | | | | | |

**14-** छात्र प्रवेश महोत्सव

**15-30-** संस्कृत सम्भाषण शिविर

### स्वस्थ रहने के लिए-

1) स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आवश्यक है सन्तुलित मन, सन्तुलित विश्राम, सन्तुलित भोजन, सन्तुलित श्रम तथा प्रकृति का उन्मुक्त सेवन ।
2) प्रसन्न मुद्रा में धीरे-धीरे खूब चबा-चबाकर भोजन करें।
3) अम्लीय खाद्य पदार्थों का त्याग करें तथा क्षारीय खाद्य पदार्थों का प्रयोग अधिक करें। स्वस्थ शरीर के लिए 80% क्षारीय तथा 20% अम्लीय खाद्य पदार्थ चाहिये ।
4) अम्लीय खाद्य पदार्थ- मांस, मछली, अण्डा, बेसन, मैदा तथा चीनी के बने आहार, छिलका रहित दाल, चावल, चाय, कॉफी, बिस्कुट, मैदा, पावरोटी, बर्गर आदि, फास्टफूड, कोका जैसे पेय इत्यादि।
5) क्षारीय भोजन-सभी प्रकार के ताजे फल तथा ताजी हरी सब्जियाँ, छिलके सहित दाल तथा अंकुरित अन्न, दलहन, तिलहन । शर्करा एवं प्रोटीन एक साथ नहीं खायें।
6) कम खाइये, सन्तुलित खाइये। खाते वक्त प्रभु के प्रति कृतज्ञता का बोध हो कि जो खा रहे हैं, वह प्रभु का दिव्य प्रसाद है। खट्टे-मीठे फल एक साथ मिलाकर नहीं खायें।

/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com• www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

**ईश्वर और भगवान् में अन्तर-** ईश्वर एक है, संसार का राजा है, स्वामी है, संसार को बनाता है, पालन करता है, कर्मों के फलों को देता है, वेद ज्ञान देता है तथा संसार का विनाश करता है। वह ईश्वर संख्या में केवल एक है। उसका भगवान् भी नाम है। लेकिन जो भगवान् शब्द है, यह ईश्वर के लिए प्रयोग होता ही है और मनुष्यों के लिए भी प्रयोग होता है। मनुष्यों में जो महापुरुष होते हैं, जो विशेष योग्यता वाले दिव्य पुरुष होते हैं, उनको भी भगवान् कहा जाता है। **उनको भगवान् इसलिए कहते हैं-** वान् अर्थात् वाला। भग अर्थात्- ऐश्वर्य, तेज, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य। जिसमें ये छः चीजें हों, उसका नाम भगवान्। भगवान् किसी को कहेंगे तो वह सृष्टिकर्त्ता नहीं है, ईश्वर नहीं है। ईश्वर अलग चीज है, वह एक ही है। किन्तु महापुरुष अनेक हैं, जिनके पास ये छः चीजें विद्यमान हैं, वे सब भगवान् हैं और हम भी भगवान् बन सकते हैं। भगवान् शब्द साधारण है, दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकता है। ईश्वर के लिए और महापुरुषों के लिए भी। ईश्वर शब्द केवल एक ही के लिए प्रयोग होगा। जो दुनिया का राजा है, स्वामी है।

**June 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

# JULY 2026
# जुलाई २०२६

आषाढ़-श्रावण

**August 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण वर्षा ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | पूर्वाषाढा 1 आषाढ़ कृ. १ राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस | उत्तराषाढ 2 आषाढ़ कृ. २ | श्रवण 3 आषाढ़ कृ. ३ | धनिष्ठा 4 आषाढ़ कृ. ४ | शतभिषा 5 आषाढ़ कृ. ५ |
| पूर्वाभाद्रपदा 6 आषाढ़ कृ. ६ | उत्तराभाद्रपदा 7 आषाढ़ कृ. ७ | रेवती 8 आषाढ़ कृ. ८ | अश्विनी 9 आषाढ़ कृ. ९/१० | भरणी 10 आषाढ़ कृ. ११ | कृत्तिका 11 आषाढ़ कृ. १२ | रोहिणी 12 आषाढ़ कृ. १३ |
| आर्द्रा 13 आषाढ़ कृ. १४ | पुनर्वसु 14 आषाढ़ कृ. अमावास्या | पुष्य 15 आषाढ़ शु. १ | आश्लेषा 16 आषाढ़ शु. २ जगन्नाथ रथयात्रा | मघा 17 आषाढ़ शु. ३ | पूर्वाफाल्गुनी 18 आषाढ़ शु. ४ | उत्तराफाल्गुनी 19 आषाढ़ शु. ५ |
| हस्त 20 आषाढ़ शु. ६ | चित्रा 21 आषाढ़ शु. ७ | स्वाती 22 आषाढ़ शु. ८ | विशाखा 23 आषाढ़ शु. ९ सिंह संक्रान्ति चन्द्रशेखर आजाद जन्मदिवस | अनुराधा 24 आषाढ़ शु. १० | अनुराधा 25 आषाढ़ शु. ११ | ज्येष्ठा 26 आषाढ़ शु. १२ कारगिल विजय दिवस |
| मूल 27 आषाढ़ शु. १३ | पूर्वाषाढा 28 आषाढ़ शु. १४ | उत्तराषाढा 29 आषाढ़ शु. पूर्णिमा सिंह संक्रान्ति गुरु पूर्णिमा | श्रवण 30 श्रावण कृ. १ | धनिष्ठा 31 श्रावण कृ. २ उधमसिंह बलिदान दिवस | | |

## पूर्ण आयु को कौन प्राप्त नहीं होते?

अतिमानोऽतिवादश्च तथाऽत्यागो नराधिप।
क्रोधश्चात्मविधित्सा च मित्रद्रोहश्च तानि षट्।।
एत एवासयस्तीक्ष्णाः कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम्।
एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युर्भद्रमस्तु ते।। (विदुरनीति-5/10-11)

अति अभिमान, बहुत बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, आत्मपोषण की इच्छा और मित्रद्रोह ये छः वे कारण हैं, जिनसे पुरुष पूर्ण आयु तक जीवित नहीं रहता। (आत्मपोषण = केवल अपने लिए जीना, अपने खाने-पीने में मस्त रहना अर्थात् शिश्नोदर परायणता)

प्रथम श्लोक में प्रतिपादित छः तीक्ष्ण तलवारें ही शरीरधारियों की आयु को काटती हैं, ये ही मानवों को मारती हैं, मृत्यु नहीं मारती। इसलिये हे राजन्! तुम अभिमान आदि को त्यागो। तुम्हारा कल्याण होगा।

/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

इसी एक जीवन में ईश्वर को जाना जा सकता है, यदि इस जीवन में ईश्वर को छोड़ दिया तो हाथ में कुछ नहीं आयेगा। चार प्रकार के लोग हैं- 1) एक प्रकार के वे लोग हैं जो नास्तिक हैं, ईश्वर को नहीं मानते। 2) कुछ ऐसे भी लोग हैं जो ईश्वर को गलत रूप से मानते हैं अर्थात् ईश्वर जैसा है, वैसा नहीं मानते, विपरीत मानते हैं। 3) कुछ लोग हैं जो ईश्वर के स्वरूप को ठीक-ठीक जानते हैं, अनेक शास्त्रों का अध्ययन करके ईश्वर के यथार्थ स्वरूप से परिचित हैं, किन्तु वैसा आचरण में नहीं लाते हैं। जानते हैं, पर ईश्वर के विधान को आचरण में नहीं लाते। 4) चौथे प्रकार के वे लोग हैं- जो ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करके जानते हैं तथा आचरण भी उसी वेद की आज्ञानुसार करते हैं। ज्यादा पढ़ने-सुनने का लाभ तब होता है, जब हम उसे आचरण में लायें।

**July 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

# AUGUST 2026

# अगस्त २०२६

श्रावण-भाद्रपद

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

**September 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

उत्तरायण वर्षा-शरद् ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रेवती<br>**31**<br>भाद्रपद कृ.३ | | | | | शतभिषा<br>**1**<br>श्रावण कृ. ३ | पूर्वाभाद्रपदा<br>**2**<br>श्रावण कृ. ४<br>मित्रता दिवस |
| उत्तराभाद्रपदा<br>**3**<br>श्रावण कृ. ५ | रेवती<br>**4**<br>श्रावण कृ. ६ | अश्विनी<br>**5**<br>श्रावण कृ. ७ | भरणी<br>**6**<br>श्रावण कृ. ८ | कृत्तिका<br>**7**<br>श्रावण कृ. ९ | रोहिणी<br>**8**<br>श्रावण कृ. १० | मृगशिरा<br>**9**<br>श्रावण कृ. ११ |
| आर्द्रा<br>**10**<br>श्रावण कृ. १२/१३ | पुनर्वसु<br>**11**<br>श्रावण कृ. १४<br>खुदीराम बलिदान दिवस | पुष्य<br>**12**<br>श्रावण कृ. अमावास्या<br>विश्व युवा दिवस | आश्लेषा<br>**13**<br>श्रावण शु. १ | मघा<br>**14**<br>श्रावण शु. २ | पूर्वाफाल्गुनी<br>**15**<br>श्रावण शु. ३<br>स्वतन्त्रता दिवस<br>हरियाली तीज | उत्तराफाल्गुनी<br>**16**<br>श्रावण शु. ४ |
| हस्त<br>**17**<br>श्रावण शु. ५<br>नाग पञ्चमी | चित्रा<br>**18**<br>श्रावण शु. ६ | स्वाती<br>**19**<br>श्रावण शु. ७<br>तुलसी दास जयन्ती | विशाखा<br>**20**<br>श्रावण शु. ८ | अनुराधा<br>**21**<br>श्रावण शु. ९ | ज्येष्ठा<br>**22**<br>श्रावण शु. १० | मूल<br>**23**<br>श्रावण शु. ११<br>शरद् ऋतु प्रारम्भ<br>कन्या संक्रान्ति |
| पूर्वाषाढा<br>**24**<br>श्रावण शु. १२<br>राजगुरु जन्म दिवस | उत्तराषाढा<br>**25**<br>श्रावण शु. १३ | श्रवण<br>**26**<br>श्रावण शु. १३ | धनिष्ठा<br>**27**<br>श्रावण शु. १४ | शतभिषा<br>**28**<br>श्रावण शु. पूर्णिमा<br>संस्कृत दिवस<br>रक्षा बन्धन<br>श्रावणी उपाकर्म | पूर्वाभाद्रपदा<br>**29**<br>भाद्रपद कृ.१ | उत्तराभाद्रपदा<br>**30**<br>भाद्रपद कृ.२ |

**23- गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार तथा सप्तदश चतुर्वेद पारायण यज्ञ शुभारम्भ समारोह**

**आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः ।**
**स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः ।।** (छान्दो.7/26/2)

भोजन की पवित्रता होने पर अन्तःकरण में निर्मलता आती है। निर्मल अन्तःकरण वालों की सारी समस्यायें खत्म हो जाती हैं।

जो अन्न खाया जाता है, उसका स्थूल अंश मल और मध्यम अंश मांस बनता है तथा उसके सूक्ष्म अंश से मन को पोषण मिलता है। जो जल पिया जाता है, उसका स्थूल अंश मूत्र और मध्यम अंश रक्त भाव को प्राप्त होता है तथा उसके सूक्ष्म अंश से प्राण को पोषण मिलता है। तेजरूप घृत, तैल आदि का स्थूल अंश अस्थिरूप में और मध्यम अंश मज्जारूप में परिवर्तित होता है तथा सूक्ष्म अंश वाणी को पुष्ट बनाता है। संक्षेप में मन-अन्नमय, प्राण-जलमय, और वाणी तेजोमयी है।

/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org • 7735335895, 9438381611

ओ३म्

## सृष्टि कैसी है?

रागविरागयोर्योगः सृष्टिः (सांख्य 2/9) यहां सृष्टि में चौबीस घन्टे राग-द्वेष चालू ही रहता है। किसी को किसी पदार्थ पर आसक्ति है, तो और किसी को किसी पदार्थ पर जलन है। किसी पदार्थ पर किसी की प्रीति है, तो किसी को किसी के साथ लड़ाई-झगड़ा है। कोई खुशी में है, तो कोई गम में है। इसी को सृष्टि कहते हैं। सृष्टि में स्पष्टरूप से ये दो चीजें दिखाई देती हैं, ये दो चीजें ही हमें संसार में भी लाती हैं। संसार को संसार क्यों कहा जाता है? सम्यक् रूपेण सरति इति संसारः। संसार सर्वदा बदलते रहता है। अर्थात् राग-द्वेष के कारण पुनः-पुनः संसार में जन्म-मरण रूपक बदलाव होते रहता है। अर्थात् राग-द्वेष के कारण भिन्न-भिन्न रूपों में=शरीरों में जन्म लेते रहते हैं।

**August 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

# SEPTEMBER 2026
# सितम्बर २०२६

भाद्रपद-अश्विनी

**October 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण शरद् ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अश्विनी<br>**1**<br>भाद्रपद कृ. ४/५ | भरणी<br>**2**<br>भाद्रपद कृ. ६<br>बलराम जयन्ती | कृत्तिका<br>**3**<br>भाद्रपद कृ. ७ | रोहिणी<br>**4**<br>भाद्रपद कृ. ८<br>श्री कृष्ण जन्माष्टमी | मृगशिरा<br>**5**<br>भाद्रपद कृ. ९<br>शिक्षक दिवस | आर्द्रा<br>**6**<br>भाद्रपद कृ. १० |
| पुनर्वसु<br>**7**<br>भाद्रपद कृ. ११<br>गोपाल पाठा जन्म दिवस | पुष्य<br>**8**<br>भाद्रपद कृ. १२<br>विश्व साक्षरता दिवस | आश्लेषा<br>**9**<br>भाद्रपद कृ. १३ | मघा<br>**10**<br>भाद्रपद कृ. १४ | पूर्वाफाल्गुनी<br>**11**<br>भाद्रपद कृ. अमावास्या | उत्तराफाल्गुनी<br>**12**<br>भाद्रपद शु. १ | हस्त<br>**13**<br>भाद्रपद शु. २ |
| चित्रा<br>**14**<br>भाद्रपद शु. ३<br>आर्यभाषा (हिन्दी) दिवस<br>गणेश चतुर्थी | स्वाती<br>**15**<br>भाद्रपद शु. ४<br>अभियन्ता दिवस | विशाखा<br>**16**<br>भाद्रपद शु. ५ | अनुराधा<br>**17**<br>भाद्रपद शु. ६<br>विश्वकर्मा पूजा | ज्येष्ठा<br>**18**<br>भाद्रपद शु. ७<br>मदनलाल ढींगरा जन्म दिवस | मूल<br>**19**<br>भाद्रपद शु. ८ | पूर्वाषाढा<br>**20**<br>भाद्रपद शु. ९ |
| उत्तराषाढा<br>**21**<br>भाद्रपद शु. १० | उत्तराषाढा<br>**22**<br>भाद्रपद शु. ११ | श्रवण<br>**23**<br>भाद्रपद शु. १२<br>आयुर्वेद दिवस<br>तुला संक्रान्ति | धनिष्ठा<br>**24**<br>भाद्रपद शु. १३ | शतभिषा<br>**25**<br>भाद्रपद शु. १४<br>अनन्त चतुर्दशी | पूर्वाभाद्रपदा<br>**26**<br>भाद्रपद शु. पूर्णिमा | उत्तराभाद्रपदा<br>**27**<br>आश्विन कृ.१ |
| रेवती<br>**28**<br>आश्विन कृ.२<br>भगतसिंह जन्मदिवस | अश्विनी<br>**29**<br>आश्विन कृ.३<br>विश्व हृदय दिवस | भरणी<br>**30**<br>आश्विन कृ.४ | | | | |

**4-** सप्तदश चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति
**13-** गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों की क्रीडा प्रतियोगिता
**20-** कनिष्ठ ब्रह्मचारियों की गायन प्रतियोगिता
**27-** वरिष्ठ ब्रह्मचारियों की भाषण प्रतियोगिता

> व्यायामः कफ नाशाय वात नाशाय मर्दनम् ।
> स्नानं च पित्त नाशाय मात्रया तान् समाचरेत्।।

कफ प्रकृति वाले व्यायाम प्रतिदिन करके पसीना निकालें, वात प्रकृति वाले तेल मालिश करें और इसी प्रकार पित्त प्रकृति वालों के लिए स्नान, तैरना, कटिस्नान, पानी पीना आदि अनुकूल रहते हैं। जिन पुरुषों में वात, पित्त, कफ तीनों दोष सम मात्रा में रहते हैं, उनकी अग्नि सम रहती है। वात प्रकृति वालों की अग्नि विषम, पित्त वालों की तीक्ष्ण और कफ वालों की मन्द रहती है। इन दोषों के निवारण के लिए वात आदि प्रकृति वालों को स्वेदन, उष्ण जल, जठराग्नि को बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिये।

कफ और लोभ का, पित्त और क्रोध का तथा वात और काम का घनिष्ट सम्बन्ध है। काम, क्रोध व लोभ को नरक = दुःख का कारण कहा गया है। अतः ध्यान दें वात, पित्त, कफ बढ़ना नहीं चाहिए। अधिक मीठा खाने पर कफ बढ़ता है। खट्टी चीजों का अधिक सेवन से पित्त बढ़ता है। इसी प्रकार कसैली चीजों का अधिक प्रयोग करने से वात बढ़ता है।

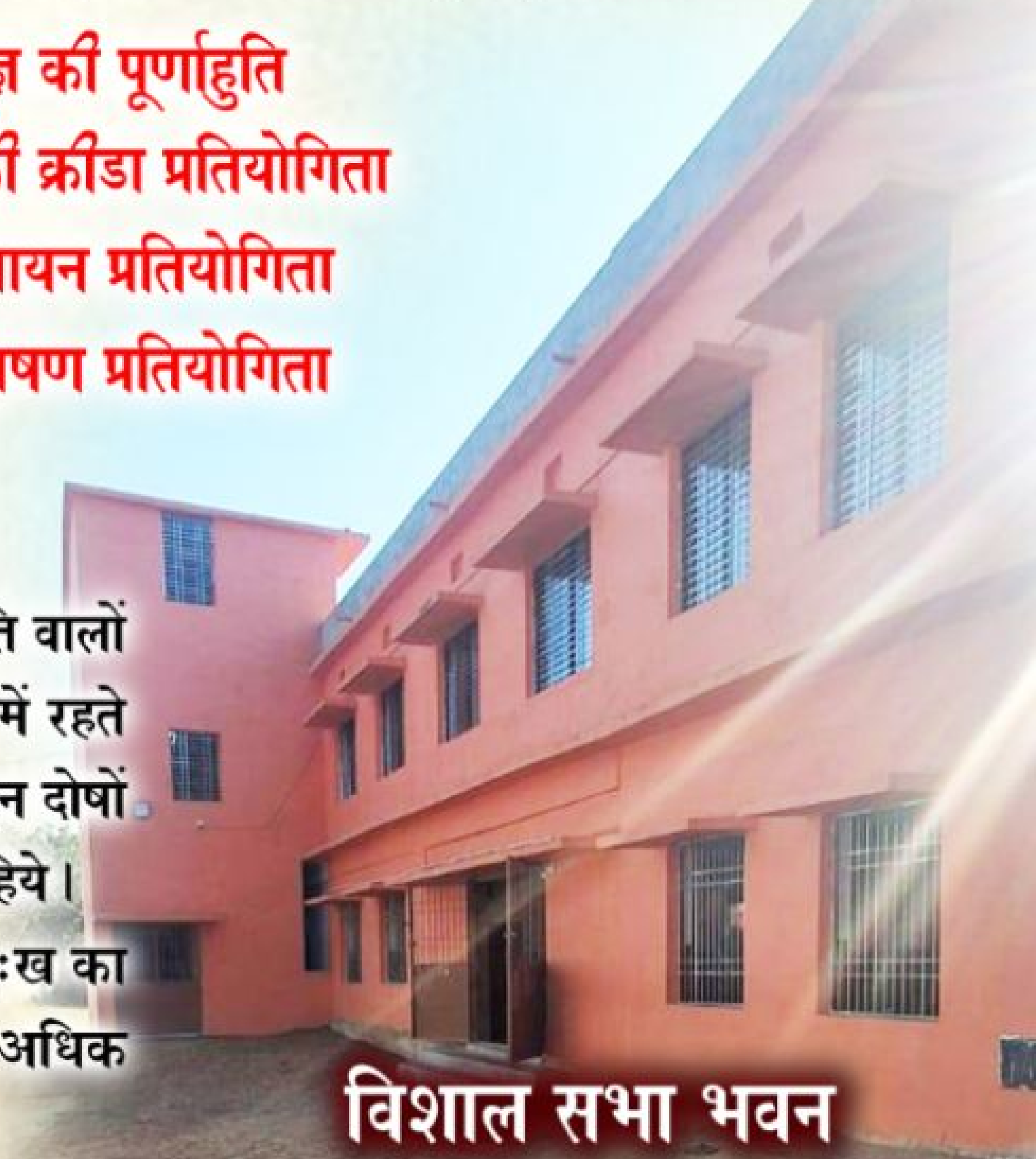

विशाल सभा भवन


/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

## स्वस्थ कौन है ?

शय्यासनस्थोऽथ पथि व्रजन्वा स्वस्थः परिक्षीणवितर्कजालः ।
संसारबीजक्षयमीक्षमाणः स्यान्नित्यमुक्तोऽमृतभोगभागी ।। (योग. व्यास भाष्य-2/32)

जो लेटा हुआ, बैठा हुआ, चलता हुआ भी स्वस्थ = स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः। जो आत्म स्वरूप में ठहरता है = रहता है, वह अहिंसा, सत्य आदि से विपरीत वितर्क जाल को चारों ओर से समाप्त कर देता है (परीक्षीण: परित: क्षीण:) शरीर से तो हिंसादि नहीं करता, मन से भी नहीं करता है। उस ऐसा स्वस्थ = आत्म स्वरूप में स्थित साधक योगी संसार का कारण अविद्या रूपक बीज को नष्ट करता हुआ नित्यानन्द भोग को भोगने वाला होता है। वह स्वस्थ पुन: जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। तन्निवृत्तावुपशान्तोपराग: स्वस्थ: (सांख्य 2/34) यहां स्वस्थ उसे कहा गया है- जिसके पास राग नहीं है, अर्थात् राग रहित व्यक्ति ही स्वस्थ है। स्वस्थ व्यक्ति जन्म-मरण चक्र को काट सकता है। पूर्ण सुख=मोक्षानन्द का अधिकारी होता है।

**September 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

# OCTOBER 2026
# अक्टूबर- २०२६

**November 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

आश्विन-कार्तिक

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण शिशिर ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

1- ओड़िशा के महान् संस्कारक श्रीवत्स पण्डा जयन्ती
4- वरिष्ठ ब्रह्मचारियों का निबन्ध लेखन प्रतियोगिता
11- कनिष्ठ ब्रह्मचारियों का चित्रांकन प्रतियोगिता
17-21- युवा चरित्र निर्माण शिविर

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | कृत्तिका<br>**1**<br>आश्विन कृ.५<br>रक्तदान दिवस | रोहिणी/ मृगशिरा<br>**2**<br>आश्विन कृ.६<br>शास्त्री/गांधी जयन्ती | आर्द्रा<br>**3**<br>आश्विन कृ.७ | पुनर्वसु<br>**4**<br>आश्विन कृ.८/९<br>श्यामजी कृष्णवर्मा जन्म दिवस |
| पुष्य<br>**5**<br>आश्विन कृ.१० | आश्लेषा<br>**6**<br>आश्विन कृ.११ | मघा<br>**7**<br>आश्विन कृ.१२ | पूर्वाफाल्गुनी<br>**8**<br>आश्विन कृ.१३<br>विश्व दृष्टि दिवस<br>वायुसेना दिवस | उत्तराफाल्गुनी<br>**9**<br>आश्विन कृ.१४<br>विश्व डाक दिवस | हस्त<br>**10**<br>आश्विन कृ.अमावास्या | चित्रा<br>**11**<br>आश्विन शु. १<br>नवरात्र प्रारम्भ<br>महाराजा अग्रसेन जयन्ती |
| स्वाती<br>**12**<br>आश्विन शु. २ | विशाखा<br>**13**<br>आश्विन शु. ३ | अनुराधा<br>**14**<br>आश्विन शु.४ | ज्येष्ठा<br>**15**<br>आश्विन शु.५ | मूल<br>**16**<br>आश्विन शु.६<br>विश्व खाद्य दिवस | मूल<br>**17**<br>आश्विन शु.७ | पूर्वाषाढा<br>**18**<br>आश्विन शु.८ |
| उत्तराषाढा<br>**19**<br>आश्विन शु.८ | श्रवण<br>**20**<br>आश्विन शु. ९<br>विजया दशमी (दशहरा) | धनिष्ठा<br>**21**<br>आश्विन शु. १०<br>पुलिस स्मृति दिवस | शतभिषा<br>**22**<br>आश्विन शु. ११ | पूर्वाभाद्रपदा<br>**23**<br>आश्विन शु. १२<br>हेमन्त ऋतु प्रारम्भ<br>वृश्चिक संक्रान्ति | उत्तराभाद्रपदा<br>**24**<br>आश्विन शु. १३ | रेवती<br>**25**<br>आश्विन शु. १४ |
| अश्विनी<br>**26**<br>आश्विन शु. पूर्णिमा<br>वाल्मीकि जयन्ती | भरणी<br>**27**<br>कार्तिक कृ. १/२ | कृत्तिका<br>**28**<br>कार्तिक कृ. ३ | रोहिणी<br>**29**<br>कार्तिक कृ. ४<br>करवा चौथ | मृगशिरा<br>**30**<br>कार्तिक कृ. ५ | आर्द्रा<br>**31**<br>कार्तिक कृ. ६<br>राष्ट्रिय एकता दिवस<br>सरदार पटेल जयन्ती | |

**यस्य माता गृहे नास्ति तस्य माता हरीतकी।**
**कदाचित् कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी।।**

जिसके घर में माता नहीं हैं, उसके लिए हरीतकी (हरड़) माता है। माता कभी – कभी क्रोधित हो सकती है, लेकिन उदर में रहने वाली हरीतकी कभी भी हानिकारक नहीं होती।

## हरड़ सेवन की विधि

**उत्तरायण**

माघ-फाल्गुन-शिशिर ऋतु
पीपल के साथ
चैत्र-वैशाख-वसन्त ऋतु
शहद के साथ
ज्येष्ठ-आषाढ़-ग्रीष्म ऋतु
गुड़ के साथ

**दक्षिणायण**

श्रावण-भाद्रपद-वर्षा ऋतु
सेन्धा नमक के साथ
आश्विन-कार्तिक-शरद् ऋतु
आँवला के साथ
मार्गशीर्ष-पौष-हेमन्त ऋतु
सोंठ के साथ

आप सबके सहयोग से आगामी दिनों में 500 ब्रह्मचारियों के लिए बनने वाला भावी गुरुकुल हरिपुर छात्रावास भवन


/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org • 7735335895, 9438381611

ओ३म्

## चार प्रकार से काम करने पर जीवन में सफलता मिलती है।

1) **श्रवण**- पूरा ध्यान पूर्वक मन लगाकर सुनना। अर्थात् उपदेशक वक्ता को मन लगाकर सुनना। 2) **मनन**- अपने घर जाकर उपदेशक के सुने हुए उपदेश को चिन्तन करना, सुने विषय को पक्ष-विपक्ष बनाकर उस पर चिन्तन करना, मन के अन्दर हीं बहस करना। 3) **निदिध्यासन**- उपदेशक का उपदेश शास्त्रों के अनुसार है, उन्होंने जो उपदेश दिया था, उसको आचरण में लाकर अनेक लोग उपलब्धियों को प्राप्त किये हैं, ऋषि-महर्षियों ने उनको आचरण में लाकर ईश्वर साक्षात्कार किये थे। अब सुने हुये उपदेश को स्वीकार करने के लिए निर्णय ले जाना। 4) **साक्षात्कार**- जब सुने हुए उपदेश को प्रयोग में लाकर सिद्धि = सफलता = कृतकृत्यता = लाभ = शान्ति आदि के रूप में पाया जाता है, तो उसे कहते हैं साक्षात्कार। आचार्य कपिल सांख्य दर्शन में लिखते हैं- नोपदेशश्रवणेऽपि कृतकृत्यता परमर्शादृते विरोचनवत्।

**September 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

# NOVEMBER 2026

# नवम्बर- २०२६

कार्तिक-मार्गशीर्ष

**November 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण शिशिर ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

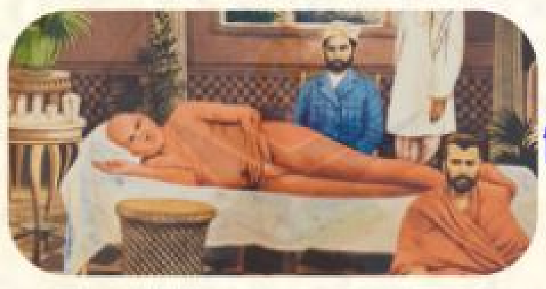

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती
निर्वाण दिवसः आश्विन कृ. अमावस्या- २०८३

**1-10 -अर्धवार्षिकी परीक्षा**

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आश्लेषा **30** मार्गशीर्ष कृ. ६/७ | | | | | | पुनर्वसु **1** कार्तिक कृ. ७ |
| पुष्य **2** कार्तिक कृ. ८ | आश्लेषा **3** कार्तिक कृ. ९ | पूर्वाफाल्गुनी **4** कार्तिक कृ. १० भाई परमानन्द जन्म दिवस | उत्तराफाल्गुनी **5** कार्तिक कृ. ११ | हस्त **6** कार्तिक कृ. १२ धन्वन्तरि जयन्ती (धनतेरस) | चित्रा **7** कार्तिक कृ. १३ | स्वाती **8** कार्तिक कृ. १४ दीपावली महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस |
| स्वाती **9** कार्तिक कृ. अमावास्या शारदीय नवसस्येष्टि | विशाखा **10** कार्तिक शु. १ गोवर्धन पूजा गुजरात नववर्ष | अनुराधा **11** कार्तिक शु.२ भ्रातृ द्वितीया | ज्येष्ठा **12** कार्तिक शु.३ | मूल **13** कार्तिक शु.४ | पूर्वाषाढा **14** कार्तिक शु.५ बाल दिवस | उत्तराषाढा **15** कार्तिक शु.६ |
| श्रवण **16** कार्तिक शु.७ | धनिष्ठा **17** कार्तिक शु.८ लाला लाजपतराय बलिदान दिवस | शतभिषा **18** आश्विन शु. ९ | पूर्वाभाद्रपदा **19** कार्तिक शु.१० रानी लक्ष्मीबाई जन्म दिवस | उत्तराभाद्रपदा **20** कार्तिक शु.११ | रेवती **21** कार्तिक शु.१२ | अश्विनी **22** कार्तिक शु. १३ धनु संक्रान्ति |
| भरणी **23** कार्तिक शु.१४ | कृत्तिका **24** कार्तिक शु. पूर्णिमा गुरु नानक जयन्ती चौधरी छोटूराम जन्मदिवस | रोहिणी **25** मार्गशीर्ष कृ. १ | मृगशिरा **26** मार्गशीर्ष कृ. २ | आर्द्रा **27** मार्गशीर्ष कृ. ३ | पुनर्वसु **28** मार्गशीर्ष कृ. ४ | पुष्य **29** मार्गशीर्ष कृ. ५ |

क) किं भाग्यं देहवतामारोग्यम्-
शरीरधारियों का सबसे बड़ा भाग्य क्या है? आरोग्य।

ख) मृतकल्पा हि रोगिणः-
रोगी व्यक्ति मरे हुए के समान होता है।

ग) लाभानां श्रेष्ठमारोग्यम्-
लाभों में श्रेष्ठ लाभ है "आरोग्य"।

घ) किं सौख्यं नित्यमरोगिता जगति-
जगत् में सुख क्या है? सदा निरोग रहना।

ङ) नित्यं सुखमरोगिणि-
निरोगी सदा सुख में रहता है।

च) सर्वमेव परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।
शरीरस्य प्रणष्टस्य सर्वमेव विनश्यति॥
सबका परित्याग करके पहले शरीर का रक्षण करें।
क्योंकि शरीर के नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

छ) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
स्वस्थ शरीर से ही धर्म संग्रह सम्भव है।

ज) धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्॥
स्वस्थ शरीर से ही पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति सम्भव है।

भोजनालय


/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com • www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611

ओ३म्

परमात्मा पहले से सब में विद्यमान हैं। मन में भी परमात्मा हैं, किन्तु मन में परमात्मा का विषय नहीं बन रहा है, क्योंकि वह मन विभिन्न विषयों में लगा हुआ है। जब मन में कोई सांसारिक विषय नहीं बनाया जाता है, पहले से विद्यमान परमात्मा में जो परदा पड़ा हुआ है, उसको केवल उठाना है, तब देखिये परमात्मा विषय बन जायेगा। सब कुछ छोड़ देना परवैराग्य है अर्थात् कोई चीज उस मन में, है ही नहीं, उस स्थिति को परवैराग्य कहेंगे। यदि मन में अन्य विषय बने हुये हैं, ये चाहिए, वो चाहिए का तो असम्प्रज्ञान समाधि नहीं लग सकती। बच्चे जब खेलते रहते हैं, तब माँ खिलौनों को देती है, खिलौने देने पर भी जब बच्चा खेलता नहीं, उन्हें फेंक देता है, रोता है, तो माँ बच्चे को अपने पास ले लेती है। वैसे ही जब तक हम सांसारिक विषय वासना सम्बन्धित खिलौनों से युक्त रहते हैं, तब तक ईश्वर से दूर रहते हैं। जैसे ही उन विषय वासना रूपक खिलौनों को छोड़ देते हैं, योग के लिए छटपटाते हैं, रोते हैं, केवल एक ईश्वर को ध्येय बनाते हैं, तब ईश्वर की प्राप्ति होती है।

**November 2026**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

# DECEMBER 2026
# दिसम्बर- २०२६

पौष-माघ

**January 2027**

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

विक्रम संवत्- २०८३ जगत्-वेद संवत्-१,९६,०८,५३,१२७

उत्तरायण शिशिर ऋतु दयानन्दाब्द-२०२

| सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार | रविवार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मघा<br>**1**<br>मार्गशीर्ष कृ. ८<br>विश्व एड्स दिवस | पूर्वाफाल्गुनी<br>**2**<br>मार्गशीर्ष कृ. ९ | उत्तराफाल्गुनी<br>**3**<br>मार्गशीर्ष कृ. १०<br>खुदीराम जन्मदिवस | हस्त<br>**4**<br>मार्गशीर्ष कृ. ११<br>नौसेना दिवस | चित्रा<br>**5**<br>मार्गशीर्ष कृ. १२ | स्वाती<br>**6**<br>मार्गशीर्ष कृ. १३ |
| विशाखा<br>**7**<br>मार्गशीर्ष कृ. १४<br>झण्डा (ध्वज) दिवस | अनुराधा<br>**8**<br>मार्गशीर्ष कृ. अमावस्या<br>भाई परमानन्द स्मृति दिवस | ज्येष्ठा<br>**9**<br>मार्गशीर्ष शु. १ | मूल<br>**10**<br>मार्गशीर्ष शु.१<br>मानवाधिकार दिवस | पूर्वाषाढा<br>**11**<br>मार्गशीर्ष शु. २ | उत्तराषाढा<br>**12**<br>मार्गशीर्ष शु. ३ | श्रवण<br>**13**<br>मार्गशीर्ष शु. ४ |
| धनिष्ठा<br>**14**<br>मार्घशीर्ष शु. ५<br>ऊर्जा बचत दिवस | धनिष्ठा<br>**15**<br>मार्घशीर्ष शु. ६ | शतभिषा<br>**16**<br>मार्गशीर्ष शु. ७ | पूर्वाभाद्रपदा<br>**17**<br>मार्गशीर्ष शु. ८ | उत्तराभाद्रपदा<br>**18**<br>मार्गशीर्ष शु. ९ | रेवती<br>**19**<br>मार्गशीर्ष शु. १०<br>बिस्मिल बलिदान दिवस | अश्विनी<br>**20**<br>मार्गशीर्ष शु. ११ |
| भरणी<br>**21**<br>मार्गशीर्ष शु. १२ | कृत्तिका<br>**22**<br>मार्गशीर्ष शु.१३<br>मकर संक्रान्ति<br>उत्तरायण<br>शिशिर ऋतु प्रारम्भ | रोहिणी/मृगशीरा<br>**23**<br>आश्विन शु. १४<br>किसान दिवस<br>स्वा. श्रद्धानन्द बलिदान दिवस | आर्द्रा<br>**24**<br>मार्गशीर्ष शु. पूर्णिमा/१ | पुनर्वसु<br>**25**<br>पौष कृ. २<br>क्रिसमस | पुष्य<br>**26**<br>पौष कृ. ३<br>उधमसिंह जन्मदिवस | आश्लेषा<br>**27**<br>पौष कृ. ४ |
| मघा<br>**28**<br>पौष कृ.५ | पूर्वाफाल्गुनी<br>**29**<br>पौष कृ.६ | उत्तराफाल्गुनी<br>**30**<br>पौष कृ. ७ | हस्त<br>**31**<br>पौष कृ. ८ | | | |

**क) दिनचर्या के ६ सूत्र -**

आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (संयम) व्यायाम, स्नान और ध्यान ।

ख) युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।। गीता ।।

जो मनुष्य भोजन, व्यवहार, भजन, उठना आदि कर्म सब नियम से करता है, उसी के लिए योग दुःख दूर करने वाला है।

ग) जो प्रातःकाल उठ जायेगा, कसरत का नियम निभायेगा, तेल लगाकर नहायेगा, प्रभु के गुण को गायेगा, भूख रखकर खायेगा, ये पांचों नियम निभायेगा, कोई रोग पास नहीं आयेगा, यदि भूल चूक से आयेगा तो मुंह फुड़वाकर जायेगा ।

कार्यालय व गुरुकुल उद्यान

/@GurukulHaripur

# गुरुकुल हरिपुर

जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) 766105

: gurukulharipur2019@gmail.com www.gurukulharipur.org 7735335895, 9438381611